आवो वली बाथो बीजी लीजिए, एक पूठीने अनेक।
हमणां हरावुं तमने, वली हंसावुं वसेक।। १७ ।।

आओ दूसरी बार, एक नहीं अनेक बार यही रामत करें और अभी तुमको हराकर सभी को हंसाएं।

कहे इंद्रावती हूं बलवंती, सुणजो सखियो वात।
नेहेचे तमने ऊंचूं जोवरावुं, वली रामत करूं अख्यात।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! मेरी बात सुनो, मैं बलवान हूं और बिना शक इसी रामत का खेल खेलकर तुमको मैं जीतकर दिखलाती हूं। अब ऐसी रामत खेलूंगी, जिसे आज तक कोई जानता ही नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। ८०२ ।।

## छंदनी चाल

एणे समे रामत गमे, वालो विलसी लिए सोसी।
अधुरी मधुरी, अमृत घूटें, छोले छूटे लिए लूटे।। १ ।।
लथ बथ, हथ सथ, अंग संग, रंग बंग चंग, चोली चूथी,
भाजी भूसी, हांसी सांसी, जाणी पाणी, नैणी माणी,
वदू वाणी, रहोजी होजी, माजी काजी, भाखूं जाखूं,
रंगे राखूं, समारूं सिणगार जी।। २ ।।
वली वसेखे, राखूं रेखे, लेऊं लेखूं, जोऊं जोखूं,
प्रेमे पेखूं घसी मसी, आवी रसी, हंसी खसी वसी,
भीसी रीसी खीसी, जरडी मरडी, करडी खरडी।। ३ ।।
खंडी खांडी, छांडी मांडी, मेली भेली, भूमी चूंमी, गाली लाली,
लोपी चापी, लाजी भाजी, दाझी काढी, आंजी हांजी,
जीती जोपे, रूडी रीते, उठी इंद्रावती आ वार जी।। ४ ।।

।। प्रकरण ।। ४२ ।। चौपाई ।। ८०६ ।।

## राग धन्या छंद

छेल छंछेरीने लीधी बाथ जुगते, रामत कीधी अति रंग जी।
स्याम सुंदरी बंने सरखी जोड, जाणिए एकै अंग जी।। १ ।।
वली रामत मांडी एक जुगते, जाणिए सघली अभंग जी।
रामत करतां आलिंघण लेतां, लटके दिए चुमन जी।। २ ।।
रमतां भीडे कठण कुचसों, छबकेसूं रंग लेत जी।
अमृत पिए वालोजी रमतां, अधुर इंद्रावती देत जी।। ३ ।।
अधुर लई मुख मांहें मारे वाले, आयत कीधी अपार जी।
भूखण उठया उठया अंगों अंगे, रहो रहो समरथ सार आधार जी।। ४ ।।

Nijanand App

रम्या रम्या मारा मारा वाला वाला, पाछी पाछी रामत कोय न रही।
हवे ने हवे आधार, आयत पूरण थई।। ५ ।।

सम सम दऊं दऊं स्याम स्याम सुणो सुणो, मम मम भीडो एणी भांत जी।
बोली बोली न न सकूं बलिया रे बलिया, पूरी पूरी मारी खांत जी।। ६ ।।

दई दई सम सम थाकी थाकी तमने, कां कां करो भीडा भीड जी।
आयत आयत आवे रे अंगो अंगें, त्यारे न देखो पीड जी।। ७ ।।

मन मन मनोरथ पूरया पूरया वाला वाला, वली वली लागूं पाय जी।
केही केही पेरे पेरे कहूं कहूं तमने, स्वांस स्वांस हैडे मुझाय जी।। ८ ।।

कर कर जोडी जोडी कहूं कहूं वाला वाला, वली वली मानज मांगूं जी।
मेलो मेलो मुखथी वात कहूं, नमी नमी चरणे लागूं जी।। ९ ।।

जेवी अमने आयत हुती, तमे तेवा रमाड्यां रंग जी।
साथ सकलमां एम सुख दीधां, इंद्रावती पामी आनंद जी।। १० ।।

।। प्रकरण ।। ४३ ।। चौपाई ।। ८१६ ।।

नोट—प्रकरण ।।४२।। और ।।४३।। श्री राजजी महाराज (पारब्रह्म अक्षरातीत) की स्वलीलाएं अद्वैत हैं, जिनका वर्णन करना या टीका लिखना शक्ति और बुद्धि से बाहर की बात है। अपनी आत्मा को जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमात्मा में विलीन कर परमधाम की लीला का अनुभव करें। जिस लीला को अक्षर ब्रह्म ने मांगा था कि परमधाम के अन्दर की प्रेम लीला, जो अपनी रूहों से धनी करते हैं और जिसे वह आपसे करती हैं, उसे दिखाओ यह वह लीला है। इस संसार की संशय भरी बुद्धि और मन इसके पात्र ही नहीं हो सकते।

## राग मलार

सखी सखी प्रते स्याम, वालेजीए देह धरया।
कांई वल्लभसूं आ वार, आनंद अति करया।। १ ।।

वालाजी ने एक-एक सखी के लिए एक-एक तन धारण किया है, जिससे इस बार आनन्द अत्यधिक हो गया।

मारा पूरण मनोरथ जेह, थया वरसूं मली।
कांई रही नहीं लवलेस, वालाजीसूं रंग रली।। २ ।।

वालाजी के मिलने पर हमारी चाहना पूर्ण हो गई है और वालाजी से आनन्द लेने की अब इच्छा शेष नहीं रही।

अमे जेम कह्यूं वाले तेम, कीधी रामत घणी।
हाम हुती हैडा मांहें, वाले टाली अमतणी।। ३ ।।

हमने वालाजी से जैसा कहा, उन्होंने वैसा खेल खिलाया और हमारे हृदय की इच्छाओं को पूर्ण कर दिया।

Nijanand App